मसीह क्यों आया

मसीह ने आम तौर पर नकारात्मक का इस्तेमाल करते हुए अर्थात यह समझाते हुए कि क्या सत्य *नहीं* है, सिखाया। उसका मानना था कि लोगों को उलझन में पड़ने से बचने के लिए झूठी शिक्षा तथा विचारों से अवगत होना चाहिए। यीशु की शिक्षाओं में पृथ्वी पर अपने आने के बारे में कई टिप्पणियां मिलती हैं। यह ''नकारात्मक'' हमें इस सत्य को समझाने में सहायक है कि वह क्यों आया।

वह संसार को बचाने आया, दोषी ठहराने नहीं

यूहन्ना 3:17 में यीशु ने कहा, ''परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा, कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।'' एक अवसर पर, याकूब और यूहन्ना ने सामरिया के कुछ ग्रामीणों पर आग बरसानी चाही थी जिन्होंने यीशु को इसलिए ग्रहण नहीं किया था क्योंकि वह यरूशलेम की ओर जा रहा था। यीशु ने उन्हें यह कहकर डांटा, ''क्योंकि मनुष्य का पुत्र लोगों के प्राणों को नाश करने नहीं बरन बचाने के लिए आया है'' (लूका 9:56)।

परमेश्वर की योजना तथा इच्छा संसार के विनाश की नहीं, बल्कि उद्धार की है। वह किसी भी पापी को दण्ड देने में उतावला नहीं है अर्थात वह चाहता है ''कि सबको मन फिराने का अवसर मिले'' (2 पतरस 3:9)। कुछ लोग परमेश्वर को क्रूर राजा की तरह दिखाते हैं जो गलतियां ढूंढ़ने की ताक में रहता है; परन्तु पवित्र शास्त्र में परमेश्वर को ऐसा नहीं दिखाया गया है। जब परमेश्वर द्वारा नीनवे को नाश न करने पर योना नाराज हो गया था, तो परमेश्वर ने ऐसा व्यवहार करने पर उसे फटकार लगाई थी। उसने कहा था, ''फिर यह बड़ा नगर नीनवे, जिसमें एक लाख बीस हज़ार से अधिक मनुष्य हैं जो अपने दहिने बाएं हाथों का भेद नहीं पहिचानते, और बहुत घरेलू पशु भी उस में रहते हैं, तो क्या मैं उस पर तरस न खाऊं?'' (योना 4:11)। मनुष्य का उद्धार न होने पर परमेश्वर दुखी होता है क्योंकि उसका उद्देश्य लोगों को बचाना है।

फिर तो, यीशु का पहली बार आना संसार का न्याय नहीं बल्कि उद्धार करने के लिए था।

वह व्यवस्था तथा भविष्यवक्ताओं की बातों को पूरा करने आया, नाश करने नहीं

यीशु ने अपने पीछे आने वालों से कहा, ''यह न समझो कि मैं व्यवस्था या भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूं लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूं'' (मत्ती 5:17, 18क)। उसने ऐलान किया, ''... व्यवस्था से एक मात्रा या एक बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा'' (मत्ती 5:18ख)। व्यवस्था तब तक खत्म नहीं होनी थी *जब तक* इसकी एक-एक बात पूरी न हो जाती।

कुछ लोग यह दावा करने के लिए कि पुराना नियम अभी भी लागू है, इस पद का इस्तेमाल करते हैं, परन्तु इसमें इसके बिल्कुल विपरीत बात बताई गई है। यीशु भविष्यवक्ताओं और व्यवस्था को नाश करने नहीं, बल्कि पूरा करने के लिए आया था और उसने उन्हें पूरा *किया* भी। उसने भविष्यवाणियों और व्यवस्था की शर्तों को पूरा करके उन्हें पूरा किया। अन्य पद भी निश्चित रूप से सिखाते हैं कि मूसा की व्यवस्था पूरी हो गई थी और अब वह लागू नहीं है। (पढ़िए इब्रानियों 10:9, 10; कुलुस्सियों 2:14; गलतियों 3:24, 25।)

यीशु के रूपांतरण से भी यही शिक्षा मिलती है। मूसा और एलिय्याह की उपस्थिति में, परमेश्वर ने यीशु के लिए कहा, ''इसकी सुनो'' (मत्ती 17:5)। एक समय था जब लोगों के लिए मूसा और भविष्यवक्ताओं की बात को अधिकार के रूप में मानना आवश्यक था, परन्तु अब मसीह की सुनी जानी चाहिए और उसे ही मापदण्ड माना जाना चाहिए।

वह सेवा करने आया, कराने नहीं

यीशु ने कहा था, ''मनुष्य का पुत्र, इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे; और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपने प्राण दे'' (मत्ती 20:28)। यदि वह चाहता तो अपनी सेवा के लिए, स्वर्ग से भी सेवकों को बुला सकता था। स्वर्ग और पृथ्वी की सारी शक्तियां उसके हाथ में थीं, परन्तु वह सेवा करवाने के लिए नहीं आया था।

सच्ची महानता पर यीशु का सबक याद रखना चाहिए: ''जो तुम में बड़ा हो, वह तुम्हारा सेवक बने'' (मत्ती 23:11)। यह ज़ोर देने और इस सबक को आसान बनाने के लिए, उसने अपनी कमर पर पटका या अंगोछा बांधा, जो कि दीन सेवा का पटका या अंगोछा था, और उसने प्रेरितों के पांव धोए (यूहन्ना 13:5)।

संसार में आज ऐसे लोगों की भरमार है जिनका परम उद्देश्य सेवा करवाना है। वे अपने सहायकों से, सरकार से, कलीसिया से, और जहां कहीं से भी मिल जाए, पाना ही चाहते हैं। हो सकता है कि कलीसिया के सदस्य भी शिकायत करें कि उनकी सेवा नहीं की जाती। जीवन में हमारी दिलचस्पी सेवा करवाने की नहीं होनी चाहिए। हमारा काम सेवा करना है। क्या हम यीशु के दोबारा आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, कि वह आकर अपनी कमर के साथ पटका बांधे और हमारे पांव धोए? क्या उसे अभी आवश्यकता है कि वह हमारे बीच किसी बालक को खड़ा करके हमें महानता का सबक सिखाए? ये सबक तो उसने पहले ही सिखा

दिए हैं; इसलिए हमें चाहिए कि उनसे सीख लें।

वह पापियों को बुलाने आया, धर्मियों को नहीं

एक अवसर पर यीशु ने अपने चेलों को चुनौती दी थी: ''तुम जाकर इस का अर्थ सीख लो, कि मैं बलिदान नहीं परन्तु दया चाहता हूं। क्योंकि, मैं धर्मियों को नहीं परन्तु पापियों को बुलाने आया हूं'' (मत्ती 9:13)। जब पापियों के साथ बैठकर खाने के लिए उसकी आलोचना की गई, तो उसने यह उत्तर दिया: ''वैद्य की आवश्यकता भले चंगों को नहीं परन्तु बीमारों को होती है'' (9:12)।

यीशु ने उनकी ओर ध्यान दिया जिनकी दूसरे लोग उपेक्षा कर रहे थे। जब यूहन्ना को इस आश्वासन की आवश्यकता थी कि यीशु ही वास्तव में मसीह है, तो उसके संदेशवाहकों को यह बताने के लिए कहा गया था, ''कि अन्धे देखते और लंगड़े चलते-फिरते हैं, कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं और बहिरे सुनते हैं, मुर्दे जिलाए जाते हैं, और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है'' (मत्ती 11:5)। इससे यह पुष्टि हो जानी थी कि यीशु ही आने वाला मसीह था, क्योंकि यह भविष्यवाणी की गई थी कि मसीह यह सब काम करेगा जो यीशु कर रहा था (यशायाह 61:1)। हां, यीशु उन लोगों के पास गया जिनकी दूसरे लोग उपेक्षा कर रहे थे। यह उदाहरण बुरे लोगों से संगति रखने को उनकी सहायता करने के उद्देश्य को छोड़ किसी और प्रकार से उचित नहीं ठहराता।

वह शांति नहीं बल्कि युद्ध कराने आया

यीशु ने बेशक, प्रेम और शांति की बातें की, परन्तु उसने ऐलान किया, ''यह न समझो कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने को आया हूं। मैं मिलाप कराने को नहीं, पर तलवार चलाने आया हूं'' (मत्ती 10:34)। धर्म को किसी भी दूसरे बंधन से ऊपर रखा जाना चाहिए। जब तक बुराई है, फूट तो रहेगी ही। मसीही व्यक्ति किसी भी कीमत पर अर्थात सच्चाई की कीमत पर शांति के लिए तैयार नहीं है। हमें सच्चाई को चुनना चाहिए चाहे इससे शत्रुता ही बढ़ जाए। हमें मसीह के पीछे चलने की ठान लेनी चाहिए यद्यपि इसका अर्थ मित्रों को खोना ही है। इस अर्थ में, वह तलवार चलाने आया:

> मैं तो आया हूं कि मनुष्य को उस के पिता से, और बेटी को उस की मां से, और बहू को उस की सास से अलग कर दूं। मनुष्य के बैरी उस के घर ही के लोग होंगे।
>
> जो माता या पिता को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं (मत्ती 10:35-37)।

जब सांसारिक परिवार के सदस्यों और मसीह में से किसी एक को चुनना हो तो हमें मसीह को ही चुनना चाहिए। यदि हम अपने पिता या माता, भाई या बहन या किसी भी और व्यक्ति या वस्तु को यीशु से अधिक प्रेम करते हैं तो हम उसके चेले नहीं हो सकते। यदि वह

हर हाल में प्रभु है, तो उसे हर बात में प्रभु होना चाहिए।

सारांश

आप मसीह के आने के कारणों को गलत तो नहीं समझ गए? क्या आप का जीवन वैसा ही है जैसा परमेश्वर चाहता है?

परमेश्वर के वचन पर मनन करने के समय

धन्य है वह व्यक्ति जो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता है (भजन 1:1-3)। भजन संहिता के पहले अध्याय के अनुसार, परमेश्वर के वचन पर मनन करने वाला व्यक्ति, ''धन्य'' अर्थात मुबारक है। आयत 4 प्रकट करती है कि ''दुष्ट लोग ऐसे नहीं होते।'' धर्मी व्यक्ति को पवित्र शास्त्र के विषय में कब विचार करना चाहिए?

दिन के समय मनन करें। यदि हम परमेश्वर के वचन में प्रसन्न रहते हैं, तो यह हमारे दिन के कामकाज और काम की व्यस्तता के समय हमारे दिल में रहता है। एक मसीही का मन परमेश्वर के वचन से तर रहता है अर्थात वह इसे किसी भी समय इस्तेमाल कर सकता है (देखिए भजन 119:11)।

रात के समय मनन कीजिए। हमें लग सकता है कि यह तो आराम का समय है। किसी व्यक्ति के धर्म के बारे में उसकी सबसे बड़ी परीक्षा आराम के समय आने वाले उसके विचार हो सकते हैं।

आराधना में मनन करें। आराधना के समय, गाते और प्रार्थना करते समय, क्या हम उन शब्दों पर मनन करते हैं? प्रभु भोज लेते समय, क्या हमारे मन क्रूस की ओर जाते हैं? व्यक्त किए जाने से पहले आराधना हमारे हृदय में होनी आवश्यक है।